International Journal of Literacy and Education

E-ISSN: 2789-1615
P-ISSN: 2789-1607
Impact Factor: 5.69
IJLE 2024; 4(1): 14-17
www.educationjournal.info
Received: 19-11-2023
Accepted: 26-12-2023

मोनिका
MA Hindi Student, Maharishi Dayanand University, Rohtak, Haryana, India

Corresponding Author:
मोनिका
MA Hindi Student, Maharishi Dayanand University, Rohtak, Haryana, India

ओमिश परूथी के सामाजिक यथार्थवादी कार्यों का विश्लेषण

मोनिका

सारांश
ओमीश परुथी ने हिंदी के आधुनिक लेखन को नई दिशा व नया भाव बोध और नई भंगिमा व कलेवर प्रदान कर हिंदी साहित्य में विशेष रूप से काव्य जगत में एक विशिष्ट स्थान अर्जित किया है। उन्होंने मानवीय स्वतंत्रता और नैतिक ईमानदारी के लिए आदमी को प्रबुद्ध किया है। व्यष्टि व समष्टि के बीच सुंदर सामंजस्य स्थापित करते हुए परुथी जी ने अपनी सृजनात्मकता को सार्थक किया है। उनका साहित्यिक योगदान हिंदी जगत के सुधी पाठकों के लिए अविस्मरणीय रहेगा। वे एक सहृदय कवि, यथार्थवादी कथाकार, प्रबुद्ध समीक्षक व अनुभवी संपादक हैं।
किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व–निर्माण में शिक्षा एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि जितना महत्व रखती है, उससे कहीं अधिक महत्व रखते हैं परिवेशगत एवं रचनागत प्रभाव। सामाजिक संघर्ष, समसामयिक परिवेश और सबसे अधिक आत्मचेतना यानी अपनी उपस्थिति में सभी महीन तत्व मिलकर व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं। परुथी जी ऐसे साहित्यकार हैं, जिनकी रचनाएँ साहित्य और समाज में शुभ घटना की तरह प्रकट होती हैं और कलात्मक व भावनात्मक उत्तेजना के लिए प्रबुद्ध पाठक वर्ग को लगातार आश्वस्त करती हैं। सामाजिक यथार्थ का अभिप्राय समाज का सत्य है, जिसमें समाज के अच्छे–बुरे दोनों पक्षों का चित्रण किया जाता है। सामाजिक यथार्थ में समाज का यथा रूप, जैसा है वैसा ही चित्रण किया जाता है। सामाजिक यथार्थवाद का लक्ष्य समाज की दयनीय स्थिति, दुर्बलताओं, विषमताओं आदि का वास्तविक रूप समाज के सामने प्रस्तुत करना है। सामाजिक यथार्थवादी रचनाकार व्यक्ति और समाज के संबंध, आर्थिक व नैतिक अवस्थाओं का मूल्यांकन तत्कालीन परिस्थितियों को ध्यान में रखकर करता है।

कूटशब्दः शिक्षा, हिंदी साहित्य, आत्मचेतना प्रबुद्ध, पाठक

प्रस्तावना
एक यथार्थवादी जिस समाज में रहता है उसके आशावादी और निराशावादी दोनों पहलुओं को चित्रित करने के लिए बाध्य है। यह पाठक को अपने वातावरण को समझने में सक्षम बनाता है। समाज को कमियों अशुद्धियों और बुराइयों से मुक्त करने के लिए साहित्य में यथार्थवाद का समावेश अत्यधिक अनिवार्य और महत्वपूर्ण है। ओमिश परूथी को हिंदी लेखकों में बहुत सम्मान दिया जाता है जो अपने यथार्थवादी दृष्टिकोण के लिए जाने जाते हैं। अपने लेखन के माध्यम से परुथी ने मुख्य रूप से मानव जीवन और सामाजिक मुद्दों के चित्रण पर ध्यान केंद्रित करते हुए हिंदी साहित्य में कई कार्यों का योगदान दिया है। ओमिश परूथी को हिंदी लेखकों में बहुत सम्मान दिया जाता है जो अपने यथार्थवादी दृष्टिकोण के लिए जाने जाते हैं। अपने लेखन के माध्यम से परुथी ने मुख्य रूप से मानव जीवन और सामाजिक मुद्दों के चित्रण पर ध्यान केंद्रित करते हुए हिंदी साहित्य में कई कार्यों का योगदान दिया है। उन्होंने समाज में व्याप्त समस्याओं और विकृतियों को यथार्थवादी और काव्यात्मक तरीके से चित्रित किया है जैसे कि भ्रष्टाचार महिलाओं का शोषण, बुजुर्गों की विकट स्थिति, तनावपूर्ण मानव संबंध, घटती नैतिकता युवा पीढ़ी के बीच भ्रम आपराधिक और पक्षपातपूर्ण राजनीति बिगड़ता वातावरण, गरीबी और बेरोजगारी। उनकी भाषाई संस्कृति के घनत्व जीवन के गतिशील तरीके और संचार के साधनों ने कई जटिल वास्तविकताओं को उजागर करके सभ्यता को चौंका देने का प्रयास किया है।

शोध का महत्व
आधुनिक साहित्य में, यथार्थवाद एक महत्वपूर्ण और अनिवार्य कार्य करता है। इस शोध की विशिष्टता इसकी अपरिहार्यता, महत्व और उद्देश्य को दर्शाती है। समकालीन समय में परुथी जी के लेखन का सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को शामिल करते हुए महत्वपूर्ण महत्व है। यथार्थवादी साहित्य समाज की वास्तविक प्रकृति को सटीक रूप से चित्रित करता है। यह अध्ययन ओमिश परुथी के लेखन में नियोजित विभिन्न यथार्थवादी तकनीकों की जांच और विच्छेदन करके अनुसंधान के संदर्भ में हिंदी साहित्य के मूल्य और महत्व को प्रदर्शित करने का प्रयास करता है।

समस्या कथनः
कला मानव सभ्यता के अस्तित्व के लिए अनिवार्य है। यह एक दर्पण के रूप में कार्य करता है, जो अपने सदस्यों के लिए समाज की विशेषताओं को दर्शाता है। इसी तरह, सामाजिक परिवर्तनों का साहित्य पर प्रभाव पड़ता है। समकालीन समाज में पारंपरिक नैतिक व्यवहारों और विचारों का क्षरण स्पष्ट है। इन चुनौतियों के बावजूद, ओमिश परुथी दृढ़ रहे हैं। अपने लेखन में उन्होंने समकालीन सभ्यता को प्रभावित करने वाली राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक समस्याओं की कड़ी आलोचना की है। हमने इन सामाजिक चिंताओं को ध्यान में रखते हुए इस शोध विषय का चयन किया, क्योंकि हम अनुमान लगाते हैं कि वास्तविक दुनिया में स्पष्ट होने के बाद व्यक्ति उनके प्रति प्रतिक्रिया देंगे।

उद्देश्य
ओमिश पारुथी जी के साहित्य में सामाजिक यथार्थवाद की उपस्थिति का विश्लेषण करनाः
किसी भी कार्य को शुरू करने से पहले पूरी तैयारी आवश्यक है। परुथि जी के कार्यों में दिखाए गए सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक पहलुओं की गहरी समझ प्राप्त करने के लिए, निर्दिष्ट विषय पर अध्ययन करने का सुझाव दिया जाता है। समकालीन समाज में कई परिवर्तन हो रहे हैं। इसके लिए इन अशुद्धियों की गहन जांच की आवश्यकता है। वर्तमान जाँच का उद्देश्य समाज के सभी क्षेत्रों में मौजूद विचलनों की पूरी तरह से जाँच करना है। इस शोध के उद्देश्य इन विचारों पर आधारित हैं। ओमेश पारुथी का उद्देश्य समकालीन समय में मूल्यों और संस्कृति के चल रहे क्षरण पर सामाजिक जागरूकता बढ़ाना है।
व्यक्तित्व के लक्षण और व्यवहार संबंधी पैटर्न जो किसी व्यक्ति के अद्वितीय मनोवैज्ञानिक बनावट को परिभाषित करते हैं। किसी लेखक की साहित्यिक कृतियों का पूरी तरह से विश्लेषण करने के लिए, उनके मानस में तल्लीन होना महत्वपूर्ण है। किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व में अंतर्दृष्टि उनके साहित्यिक कार्यों को समझने के लिए फायदेमंद हो सकती है। परुथी जी ने बहुतायत से अधिक प्रामाणिकता को प्राथमिकता दी है, कम लेकिन उच्च गुणवत्ता वाली लिखित कृतियों का निर्माण किया है। उन्होंने लगातार भविष्य की घटनाओं का अनुमान लगाया, जो आगे था उसके प्रतिबिंबों की जांच की, और एक नए और अभिनव दृष्टिकोण के साथ अपने लेखन की रचना की। उनके पास एक व्यापक और प्रगतिशील मानसिकता है। वे सीमाओं को पार करने के बारे में लिखते हैं। यह धर्म, जाति, पंथ या रंग के आधार पर कोई पूर्वाग्रह नहीं दिखाता है। वह भारतीय संस्कृति में अपनी आस्था से प्रेरित मानवतावाद के समर्थक और समर्थक हैं। उनकी रचनाओं में मानव कल्याण का अत्यधिक महत्व है। प्राकृतिक दुनिया पर उनकी असाधारण महारत है। प्रकृति के साथ अपने घनिष्ठ संबंध के कारण वे बहुत आनंद का अनुभव करते हैं। उनकी कविता प्रचुर प्राकृतिक सुंदरता से भरी हुई है। उनके लेखन की विशेषता विशिष्टता है। सभी युगों और भाषाओं में, केवल कुछ चुनिंदा लेखकों के पास साहित्यिक उत्कृष्ट कृतियों को बनाने की क्षमता है जो साहित्यिक समुदाय को आकर्षित करती हैं और अपनी भावनात्मक तीव्रता और कलात्मक उत्साह के साथ एक प्रबुद्ध पाठकों को लगातार संलग्न करती हैं।

जन्मः वितरण ओमिश पारुथी का जन्म 7 दिसंबर, 1953 को उत्तर प्रदेश के मेरठ क्षेत्र में हुआ था। उनके पिता उस स्थान पर पुनर्वास कार्यालय में कार्यरत थे।

माता–पिता और पारिवारिक संबंधः पारुथी जी के पूर्वज 1947 में देश के विभाजन से पहले पाकिस्तान के गुजरांवाला में रहते थे। स्वतंत्रता की प्राप्ति के बाद, उनका परिवार हरियाणा के करनाल के रंभा गाँव में स्थानांतरित हो गया। यह बस्ती इंद्री–लाडवा सड़क के किनारे स्थित है। उनके पिता एक किसान के रूप में काम करते थे जबकि उनकी माँ एक गृहिणी थीं। उनके पिता का नाम सूरतुल इस्लाम चौधरी था। उनमें सत्यनिष्ठा और प्रतिकूलताओं का सामना करने के बावजूद, उन्होंने हमेशा सरकारी पद पर काम करते हुए रिश्वत लेने से इनकार कर दिया। उनके पास चार भाषाओं–हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू और पंजाबी में उच्च स्तर की प्रवीणता थी। उन्हें उर्दू कविता लिखने का गहरा शौक था। इसके अलावा, उन्होंने अपने परिवार और दोस्तों के साथ–साथ हारमोनियम बजाते हुए मुखर संगीत का प्रदर्शन किया। परुथी जी की माता का नाम श्रीमती राजकुमारी देवी था, जो एक शांत स्वभाव की थीं। उनकी माँ पवित्र, गहराई से प्रतिबद्ध और भगवान की पूजा के लिए समर्पित थीं।
उन्होंने कई संस्कृत पुस्तकें लिखी हैं। उन्हें अपनी लेखन उपलब्धियों के लिए कई पुरस्कार मिले हैं।

पुरस्कार/सम्मान
परुथी जी को उनके साहित्य कर्म के लिए अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।
1. संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा सम्मानित संपादक 'मंगल विमर्श' पत्रिका।
2. हरियाणा 'एंसाइक्लोपीडिया' के अंतर्गत उनका हरियाणा में रचित महाकाव्य शीर्षक आलेख प्रकाशित हुआ, जिसके लिए उन्हें महामहिम राज्यपाल हरियाणा द्वारा सम्मानित किया गया।
3. अखिल भारतीय कला–साहित्य मंच, मुरादाबाद द्वारा पुरस्कृत।
4. साहित्य सभा कैथल, द्वारा पुरस्कृत।
5. पंचवटी 'राष्ट्र भाषा गौरव सम्मान'।
6. अखिल भारतीय साहित्य सेवी संस्थान, इलाहाबाद द्वारा राष्ट्रभाषा गौरव सम्मान।
7. उदयभानु 'हंस' कविता पुरस्कार से अलंकृत।
8. दैनिक जागरण द्वारा आयोजित 'अखिल भारतीय आलेख प्रतियोगिता' में प्रथम पुरस्कार।
9. 'लायन्स क्लब', सोनीपत द्वारा श्रेष्ठ शिक्षक सम्मान।
10. हिंदू विद्यासभा व धर्मार्थ समिति, सोनीपत द्वारा 'विशिष्ट शिक्षक' सम्मान।
11. 'अदबी संगम' द्वारा सम्मानित।
12. राष्ट्रीय 'सहारा' के तत्वावधान में प्रतिष्ठित साहित्यकार कमलेश्वर द्वारा पुरस्कृत।
13. यूनेस्को द्वारा हिरोशिमा (जापान) में आयोजित चित्रकला प्रदर्शनी में पेंटिंग प्रस्तुत।

रुचियाँ और शौक
अपनी अकादमिक गतिविधियों, शिक्षण और साहित्यिक प्रयासों के अलावा, परुथी जी को स्केचिंग का भी शौक है। कला उनका आजीवन प्रेम रहा है। अपने पूरे शैक्षणिक वर्षों के दौरान, उन्होंने अपनी पसंद के माध्यम के रूप में जल रंगों का उपयोग किया, बाद में तेल चित्रकला की ओर रुख किया। समकालीन समय में, चित्रों के निर्माण के लिए ऐक्रेलिक पेंट का उपयोग किया जाता है। इसके अलावा, उन्होंने कई प्रदर्शनियों में भाग लिया है। उन्होंने व्यक्तिगत रूप से अपनी दो कविता पुस्तकों, 'आखड़ खोर' और 'अस्ताचंल' के उजाले के लिए आवरण कला बनाई। उनकी एक पेंटिंग, जिसे करनाल में एक प्रतिष्ठित संस्थान द्वारा अधिग्रहित किया गया था, यूनेस्को हिरोशिमा चित्रकला प्रदर्शनी में भी प्रदर्शित की गई थी।
परूथी जी का झुकाव प्रतिष्ठित हिंदी साहित्य के लेखकों से मिलने, उनके साथ साक्षात्कार करने और उनकी बातचीत के माध्यम से अपने ज्ञान को बढ़ाने की ओर भी है। इस विशेष ढांचे के भीतर, उन्हें प्रतिष्ठित लेखकों देवेंद्र सत्यार्थी, अमृता प्रीतम, डॉ. रामदर्श मिश्रा, उदयभानु 'हंस' और विष्णु प्रभाकर से मिलने का

सम्मान मिला। वह अक्सर उनके घरों में जाते थे और साक्षात्कार लेते थे, जो बाद में कई पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए।

परूथी और यथार्थवाद

उन सिद्धांतों और मान्यताओं का एक व्यापक अध्ययन जो इस सिद्धांत और दर्शन को रेखांकित करते हैं। यथार्थवाद एक दार्शनिक अवधारणा है। यथार्थवाद की अवधारणा को शुरू में दार्शनिक प्लेटो द्वारा एक दार्शनिक सिद्धांत के रूप में प्रस्तुत किया गया था। 19वीं शताब्दी के दौरान फ्रांस में यथार्थवाद के उद्भव ने कला और साहित्य दोनों क्षेत्रों में एक महत्वपूर्ण प्रवृत्ति को चिह्नित किया। यथार्थवाद को शुरू में एक फ्रांसीसी शिक्षाविद ने अपने काम में व्यक्त किया था, जिसके कारण यथार्थवाद को पश्चिमी साहित्य का उपहार माना जाता है। पश्चिमी देशों में यथार्थवाद के दो देश हैं। पहला दर्शन की भूमि है और दूसरा साहित्य और कला की भूमि है। यथार्थवाद, जिसे आमतौर पर ज्ञानशास्त्रीय यथार्थवाद या दार्शनिक यथार्थवाद के रूप में जाना जाता है, दर्शन के क्षेत्र में एक मान्यता प्राप्त शब्द है। ज्ञानशास्त्रीय यथार्थवाद या यथार्थवाद की अंतर्निहित धारणा इस प्रकार हैः

यथार्थवाद की अवधारणा

यथार्थवाद पश्चिमी साहित्य में एक साहित्यिक अवधारणा है जो भौतिकवाद पर आधारित है। यथार्थवाद अस्तित्व की सच्चाई का समर्थन करता है। यह सामान्य जीवन में होने वाली घटनाओं का एक स्पष्ट और प्रामाणिक चित्रण है। बोध और संवेदी अनुभव किसी व्यक्ति की वास्तविकता की समझ को निर्धारित करते हैं, और यह समझ यथार्थवाद का पर्याय है।

वस्तविकता

हिन्दी में यथार्थ और अर्थ शब्दों के संयोजन से यथार्थ शब्द का निर्माण होता है। वास्तविकता का सार चीजों का सटीक चित्रण है जो वे वास्तव में अपने मूल रूप में हैं। वास्तविकता सत्य, वास्तविकता, भौतिक स्थिति और अन्य संबंधित अवधारणाओं की अवधारणा के साधन के रूप में कार्य करती है। कई विद्वानों ने साहित्य के सार और विशेषताओं की अपनी व्याख्याएँ व्यक्त की हैं। एक प्रामाणिक लेखक अपनी व्यक्तिगत भावनाओं के आधार पर साहित्य तैयार करता है और अपने दर्शकों को वास्तविक अनुभव प्रदान करता है।यह अस्तित्व की सच्चाई और वास्तविकता का प्रतिनिधित्व करता है। आधिकारिक हिंदी शब्दकोश के अनुसार, वास्तविक और वास्तविक के बीच प्राथमिक अंतर इस तथ्य में निहित है कि वास्तविक न्याय और निष्पक्षता की भावना पर जोर देता है, चीजों का प्रतिनिधित्व करता है जैसा कि उन्हें होना चाहिए। हालांकि, वास्तविक शब्द ज्यादातर उस धारणा या तरीके से संबंधित है जिसमें कुछ या किसी को चित्रित किया गया है या मौजूद है, जो इसे कल्पना या कल्पनाशील कार्यों से अलग करता है। डॉ. रामलखन शुक्ल के अनुसार, मानव जीवन, अपनी अंतर्निहित अवस्था में, कमजोरियों और क्षमताओं का एक संयोजन है। जीवन के दोनों पहलुओं का एक निष्पक्ष प्रतिनिधित्व मौजूद है, जहां एक ही प्रकार के अस्तित्व को चित्रित किया गया है। भावनात्मक दुनिया भौतिक दुनिया के समान वास्तविकता रखती है, जबकि उनमें से किसी को भी अंतिम वास्तविकता नहीं माना जा सकता है। आनंद, उदासी, आशावाद और महत्वाकांक्षा की भावनाएँ किसी व्यक्ति के जीवन को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। वास्तविक दुनिया के शारीरिक और भावनात्मक दोनों पहलुओं को शामिल करने से चित्रण की प्रभावशीलता बढ़ जाती है। साहित्य में, यथार्थवाद का मूल सिद्धांत वस्तु को इस तरह से चित्रित करना है जो उसकी वास्तविकता को सटीक रूप से दर्शाता है। भौतिक क्षेत्र और भौतिक दुनिया न केवल मूर्त हैं, बल्कि इसकी बहुआयामी प्रकृति के कारण, इसे विभिन्न दृष्टिकोण से देखा जाता है। इस प्रकार, यही अस्तित्व की वास्तविक प्रकृति है। साहित्य प्राचीन काल से ही पारंपरिक वास्तविकता को दर्शाता रहा है।

यथार्थवाद का महत्व और व्याख्याएँ

हिंदी में दो शब्दों के योग 'यथा+अर्थ' के मिलने से यथार्थ शब्द की उत्पत्ति हुई है, यथार्थ का मतलब है – 'जो जैसा है, जिस रूप में है, उसका वैसा ही चित्रण'। हमेशा सच्चाई, हक़ीक़त, भौतिक स्थिति आदि की परिकल्पना के लिए यथार्थ का प्रयोग किया जाता है। अनेक विद्वानों ने साहित्य के स्वरूप और उसके चरित्र का वर्णन अपने–अपने शब्दों में व्यक्त किया है। एक सच्चा साहित्यकार अपनी अनुभूति के अनुसार ही साहित्य की रचना करता है और इसका यथार्थ अनुभव अपने पाठकों को कराता है। यथार्थवाद का अर्थ है एक भौतिक वस्तु जिसे प्रत्यक्ष रूप से देखा या महसूस किया जा सकता है, अर्थात् इन्द्रियों द्वारा प्राप्त ज्ञान या वास्तविकता, जिसे यथार्थवाद कहा जा सकता है, जो कल्पना के विपरीत है। यथार्थवाद साहित्य का एक विलक्षण विद्यालय है जो जीवन और समाज के यथार्थवादी चित्रण पर जोर देता है। यथार्थवाद केवल भौतिक दुनिया या भौतिक दुनिया को ही सब कुछ नहीं मानता है, बल्कि इनके साथ–साथ भावनात्मक दुनिया भी उतनी ही महत्वपूर्ण है और इसके पीछे कोई शक्ति नहीं है। अंत में, यह कहा जा सकता है कि कल्पना के विपरीत जीवन का वास्तविक अनुभव, जो भौतिक दुनिया, भौतिक दुनिया और भावनात्मक दुनिया से प्राप्त होता है, यथार्थवाद कहलाता है।

ओमिश पारुथी यथार्थवादी लेखन के क्षेत्र में एक प्रमुख व्यक्ति हैं। उनके अनुभव वैश्विक समुदाय में वास्तविकता की परंपरा को समृद्ध करते हैं और नवीन विचारों को बढ़ावा देते हैं। पारुथी जी अपने साहित्य में निर्भीकता से समकालीन जीवन की असामान्यताओं, राजनेताओं की घृणित राजनीति और धार्मिक ठेकेदारों के धोखे को शामिल करते हैं। उनके लेखन की प्राथमिक विशेषता वास्तविकता का एक स्पष्ट और जीवंत चित्रण है। उन्होंने अपनी साहित्यिक कृतियों में व्यक्तियों की भावनाओं, स्थितियों और मुद्दों को चित्रित किया है।आस्था के अस्तिकालश के संकलन में कविता सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवेश के साथ प्रतिध्वनित होती है। ये कविताएँ अन्याय, गरीबी, बेरोजगारी और दुख से जुड़ी वास्तविक जीवन की घटनाओं की एक विस्तृत श्रृंखला को चित्रित करती हैं। उन्होंने युवाओं को विवेकानंद जैसी प्रतिष्ठित हस्तियों का अनुकरण करने के लिए प्रेरित किया है, जो उन्हें आज के युवाओं में व्याप्त क्रोध, शत्रुता, सामाजिक मोहभंग, प्रतिशोध और अन्य विकृतियों के बढ़ते स्तरों के बीच निराशा से दूर ले जाते हैं। देश की राजनीतिक उथल–पुथल और लोगों की कठिनाइयों को वास्तविकता के ताने–बाने पर स्पष्ट रूप से अंकित किया गया है। पारुथी जी स्वयं स्वीकार करते हैं कि तीव्र राजनीतिक माहौल ने समग्र वातावरण को बहुत बाधित किया है, जिससे व्यक्तियों की सकारात्मक प्रतिष्ठा और क्षमता पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। प्रमुख, झुकी हुई आंखें हैं जो अपनी चिकनीपन को बनाए रखती हैं ऐसे कुछ पेड़ हैं जिनके पास अभी भी हरे पत्ते हैं। वैकल्पिक रूप से, रेत और मोल्डनेस के साथ–साथ पर्दे और परतें मौजूद हैं। गंध का अभाव है, फिर भी कोई सुगंध मौजूद नहीं है। ऐसी परिस्थितियों में, बोधात्मक बुद्धि की कुछ परेशान करने वाली संवेदनाएं अंतर्निहित हैं– कभी–कभी, वे छंदों के रूप में प्रकट होती हैं, जबकि अन्य समय में, छंदों को उनसे तैयार किया जाता है। इनकी संख्या 73 है। राजनीति के उत्साह से ओत–प्रोत कविताओं ने दलगत राजनीति, व्यापक भ्रष्टाचार और राजनीतिक क्षेत्र के भीतर आपराधिकता के परिदृश्य को स्पष्ट रूप से दिखाया है। वे सत्ता की अतृप्त इच्छा, जाति और समुदाय की राजनीति और बेईमान और नैतिक रूप से दिवालिया राजनेताओं की उपस्थिति पर प्रकाश डालते हैं।

पारुथी जी एक अत्यंत निपुण साहित्यिकार हैं। उनका अस्तित्व

लेखन के क्षेत्र से जटिल रूप से जुड़ा हुआ है। उनकी कृतियाँ, जो सभी स्तरों और क्षेत्रों में प्रसिद्ध हैं, आसानी से और सीधे पाठक की भावनाओं के साथ प्रतिध्वनित होती हैं। अपने साहित्यिक कार्यों के माध्यम से, उन्होंने भारतीय और पश्चिमी संस्कृति के बढ़ते प्रभाव, अति–आधुनिकतावाद की व्यापकता, नैतिक सिद्धांतों के क्षरण और युवा पीढ़ी द्वारा अनुभव किए गए भ्रम को चित्रित किया है। परुथी जी एक ऐसे लेखक हैं जो अपने लेखन में वास्तविकता को चित्रित करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं। उनका जीवन को प्रत्यक्ष रूप से समझने की ओर एक मजबूत झुकाव है, जिसके परिणामस्वरूप उनका साहित्य पाठक के सामने एक तेजी से आगे बढ़ने वाली फिल्म की तरह सामने आता है, जिसे समझने के लिए कम प्रयास की आवश्यकता होती है। उन्होंने अपने साहित्यिक कार्यों में विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक और अन्य क्षेत्रों में त्रुटियों और विसंगतियों को सटीक रूप से चित्रित किया है।

ओमिश पारुथी ने हिंदी साहित्य में, विशेष रूप से कविता के क्षेत्र में, एक नए परिप्रेक्ष्य, बढ़ी हुई समझ और एक नए कलात्मक सार के साथ समकालीन हिंदी लेखन में क्रांति और पुनः परिभाषित करके प्रतिष्ठा हासिल की है। उन्होंने व्यक्तिगत स्वतंत्रता और नैतिक अखंडता की आवश्यकता के बारे में मानवता को जागृत किया है। पारुथी जी ने व्यक्ति और सामूहिक के बीच सामंजस्यपूर्ण संबंध बनाकर अपनी रचना को उद्देश्य के साथ प्रभावी ढंग से आत्मसात किया है। भारतीय सिनेमा पर उनके प्रभाव को हमेशा याद किया जाएगा। उनके पास कविता, साहित्य, अनुवाद और पत्रकारिता में विशेषज्ञता है। किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास पर शिक्षा और पारिवारिक पृष्ठभूमि की तुलना में पर्यावरणीय और संरचनात्मक कारक अधिक प्रभाव डालते हैं। किसी का व्यक्तित्व सामाजिक संघर्षों, वर्तमान वातावरण और सबसे महत्वपूर्ण आत्म–चेतना से आकार लेता है, जो किसी की उपस्थिति के सभी नाजुक हिस्सों को शामिल करता है। पारुथी जी एक अत्यंत सम्मानित लेखक हैं जिनके लेखन को साहित्य और समाज में महत्वपूर्ण योगदान माना जाता है। वे लगातार शिक्षित पाठकों को रचनात्मक और भावनात्मक प्रेरणा प्रदान करते हैं।

निष्कर्ष

ओमिश पारुथी यथार्थवादी लेखन के एक प्रमुख प्रतिपादक हैं। लेखक मुख्य रूप से अपने साहित्यिक कार्यों में मानव अस्तित्व और सामाजिक मुद्दों की कथित वास्तविकताओं को व्यक्त करते हैं। उनके लेखन की प्राथमिक विशेषता वास्तविकता का एक स्पष्ट और जीवंत चित्रण है। उन्होंने अपनी साहित्यिक कृतियों में व्यक्तियों द्वारा सामना की जाने वाली भावनाओं, स्थितियों और चुनौतियों का चित्रण किया है। अपने साहित्य में उन्होंने मानव स्वभाव के अंतर्निहित महत्व को रेखांकित किया है। उनके अनुभव वैश्विक समुदाय और प्रगतिशील विचारधाराओं के भीतर वास्तविकता की परंपरा पर नए दृष्टिकोण का योगदान करते हैं। उनकी भाषाई संस्कृति के घनत्व, जो इसकी उज्ज्वल जीवन शक्ति और प्रभावी संचार की विशेषता है, ने कई आकर्षक तथ्यों का खुलासा किया है। उन्होंने अपने साहित्यिक कार्यों में सामाजिक, राजनीतिक और अन्य क्षेत्रों में असामान्यताओं को चित्रित करके समाज को भड़काने का प्रयास किया है। वे वास्तव में हाशिए पर पड़े लोगों का समर्थन करते हैं।पारुथी जी का व्यावहारिक अनुमोदन

संदर्भ

1. डॉ. चित्रा, जादुई यथार्थवाद और समकालीन हिंदी कथा–साहित्य, संदर्भ प्रकाशन, रोहिणी, दिल्ली पृष्ठ–12
2. रामचन्द्र वर्मा, मानक हिंदी कोश, पाँचवाँ खण्ड, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, पृष्ठ–43
3. डॉ. रामलखन शुक्ल, हिंदी उपन्यास कला, दलित साहित्य संस्थान, दिल्ली, पृष्ठ–90
4. डॉ. सी.एस.शुक्ला, शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, इलाहाबाद, पृष्ठ–262
5. डॉ. त्रिभुवन सिंह, हिंदी उपन्यास एवं यथार्थवाद, वाराणसी, पृष्ठ–7
6. एन. आर. स्वरूप सक्सेना, शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत, मेरठ, पृष्ठ–276
7. डॉ. त्रिभुवन सिंह, हिंदी उपन्यास एवं यथार्थवाद, वाराणसी, पृष्ठ–46
8. डॉ. त्रिभुवन सिंह, हिंदी उपन्यास एवं यथार्थवाद, वाराणसी, पृष्ठ–47
9. प्रेमचंद, कुछ विचार, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, पृष्ठ–49
10. जयशंकर प्रसाद, काव्य और कला तथा अन्य निबंध, भारती–भण्डार, इलाहाबाद, पृष्ठ–141–142
11. ओमीश परुथी, आस्था के अस्थिकलश, पृष्ठ–25
12. ओमीश परुथी, आस्था के अस्थिकलश, पृष्ठ–35
13. ओमीश परुथी, आस्था के अस्थिकलश, पृष्ठ–22
14. ओमीश परुथी, आस्था के अस्थिकलश, पृष्ठ–59
15. ओमीश परुथी, आस्था के अस्थिकलश, पृष्ठ–69
16. डॉ. त्रिभुवन सिंह, हिंदी उपन्यास एवं यथार्थवाद, वाराणसी, पृष्ठ–7
17. नंददुलारे वाजपेयी, आधुनिक साहित्य, भारती–भण्डार, इलाहाबाद, पृष्ठ–393
18. शिवकुमार मिश्र, यथार्थवाद, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ–241
19. डॉ. रेनू गुप्ता, शिक्षा के दार्शनिक समाजशास्त्रीय और आर्थिक आधार, लुधियाना, पृष्ठ–393
20. प्रो. सत्यव्रत सिद्धांतालंकार, समाजशास्त्र के मूलतत्त्व, देहरादून, पृष्ठ–58
21. वीरेन्द्र प्रकाश शर्मा, समाजशास्त्र का परिचय, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, पृष्ठ–143
22. ओमीश परुथी, सुलगती साँझ, पृष्ठ–45
23. ओमीश परुथी, सुलगती साँझ, पृष्ठ–60
24. ओमीश परुथी, सुलगती साँझ, पृष्ठ–62